"सुखमनी-1"

• सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ । कलि कलेस तन माहि मिटावउ । 1/1

अर्थः- मैं अकाल - पुरख का नाम स्मरण करूँ और स्मरण कर - कर के सुख हासिल करूँ ।

• सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नाम । भगत जना के मनि बिस्राम।

अर्थः- प्रभु का अमर करने वाला व सुखदाई नाम सब सुखों की मणी है, इसका ठिकाना भक्तों के हृदय में है ।

• सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ । हरि का नाम जपत होइ सुखीआ । 2/2

अर्थः- मनुष्य सारी दुनिया का राजा हो के भी दुखी रहता है पर प्रभु का नाम जपने से सुखी हो जाता है ।

• सभ ते उतम हरि की कथा । नाम सुनत दरद दुख लथा ।

अर्थः- प्रभु की महिमा की बातें और सब बातों से अच्छी हैं क्योंकि प्रभु का नाम सुनने से सारे दुख - दर्द उतर जाते हैं ।

संत का संग वडभागी पाईऐ । संत की सेवा नाम धिआईऐ ।

अर्थः- बड़े भाग्यों से संतों की संगति मिलती है और संतों की सेवा करने से प्रभु का नाम स्मरण किया जाता है ।

नाम तुलि कछु अवर न होइ । नानक गुरमुखि नाम पावै जन कोइ । 2/8

अर्थः- प्रभु नाम के बराबर और कोई पदार्थ नहीं, हे नानक ! गुरु के सन्मुख हो के कोई विरला मनुष्य नाम की दात पाता है ।

• जे को जनम मरण ते डरै । साध जना की सरनी परै ।

जिस जन कोउ प्रभ दरस पिआसा । नानक ता कै बलि बलि जासा । 3/5

अर्थः- अगर कोई मनुष्य जनम मरन के चक्कर से डरता हो तो वह संतों की चरणीं लगे । हे नानक ! कह कि जिस मनुष्य को प्रभु के दीदार की चाहत है, मैं उससे सदा सदके जाऊँ ।

• साध कै संगि पाए नाम रतन नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी । 7/1

अर्थः- गुरमुखों की संगति में मनुष्य नाम रूपी रत्न ढूँढ लेता है । हे नानक ! साधु जनों की शोभा प्रभु की शोभा के बराबर हो जाती है ।

• साध कै संग पाए नाम निधान नानक साधू कै कुरबान । 7/4

अर्थः- साधु जनों की संगति में मनुष्य नाम खजाना ढूँढ लेता है इस वास्ते हे नानक ! कह मैं साधु जनों से सदके हूँ ।

• पारब्रहम साध रिद बसै नानक उधरै साध सुनि रसै । 7/6

अर्थः- अकाल - पुरख संत जनों के हृदय में बसता है हे नानक ! मनुष्य साधु जनों की रसना से उपदेश सुन के विकारों से बच जाता है।

• साध कै संगि सुनउ हरि नाउ साध संगि हरि के गुन गाउ।

अर्थः- मैं गुरमुखों की संगति में रह के प्रभु का नाम सुनूँ और प्रभु के गुण गाऊँ ये मेरी कामना है ।

साध की सोभा साध बनि आई । नानक साध प्रभ भेद न भाई । 7/8

अर्थः- साधु की शोभा साधु को ही फबती है क्योंकि हे नानक ! कह हे भाई ! साधु और प्रभु में कोई फर्क नहीं है ।

• ब्रहम गिआनी कै मनि होई प्रगास जैसे धर उपर आकास । 8/2

अर्थः- जैसे धरती पर आकाश हर जगह व्यापक है, वैसे ही ब्रह्मानी के मन में ये रोशनी हो जाती है कि प्रभु हर जगह मौजूद है ।

• ब्रहम गिआनी का दरस वडभागी पाईऐ नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसर । 8/6

अर्थः- ब्रहमज्ञानी का दीदार बड़े भाग्यों से प्राप्त होता है । हे नानक ! अकाल - पुरख स्वयं ही ब्रहमज्ञानी का रूप है ।

• ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै । 8/7

अर्थः- उस हालत को उस जैसा ब्रहमज्ञानी ही जानता है ।

• मिथिआ नाही रसना परस मन महि प्रीति निरंजन दरस ।

अर्थः- जो मनुष्य जीभ से झूठ को छूने नहीं देता, मन में अकाल - पुरख के दीदार की तमन्ना रखता है ।

पर त्रिअ रुप न पेखै नेत्र साध की टहल संत संगि हेत ।

अर्थः- जो पराई स्त्री के हुस्न को अपनी आँखों से नहीं देखता, भले मनुष्यों की टहल सेवा करता है और संत जनों की संगति में प्रीति रखता है ।

करन न सुनै काहु की निंदा सभ ते जानै आपस कउ मंदा ।

अर्थः- जो कानों से किसी की भी निंदा नहीं सुनता, बल्कि सभी से अपने आप को बुरा समझता है ।

गुरप्रसादि बिखिआ परहरै मन की बासना मन ते टरै ।

अर्थः- जो गुरु की मेहर के सदका माइआ का प्रभाव परे हटा देता है, और जिसके मन की वासना मन से टल जाती है ।

इंद्री जित पंच दोख ते रहत नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस । 9/1

अर्थः- जो अपनी ज्ञान इंद्रिय को वश में रख के कामादिक पाँचों विकारों से बचा रहता है, हे नानक ! करोड़ों में से कोई ऐसा विरला मनुष्य 'अपरस' कहा जा सकता है ।

- जिस कै अंतरि राज अभिमान सो नरकपाती होवत सुआन । 12/1

अर्थः- जिस मनुष्य के मन में राज का गुमान है, वह कुत्ता नर्क में पड़ने का अधिकारी है ।

- करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै नानक ईहा मुकत आगै सुख पावै ।

अर्थः- मेहर करके जिस मनुष्य के दिल में गरीबी का स्वभाव डालता है, हे नानक ! वह मनुष्य इस जिंदगी में विकारों से बचा रहता है और परलोक में सुख पाता है ।

नाम जपत पावहि बिस्राम नानक तिन पुरख कउ उतम करि मान । 14/7

अर्थः- वह सेवक नाम जपके अडोल अवस्था हासिल करते हैं हे नानक ! उन लोगों को बहुत ऊँचे मनुष्य समझो ।

- जिस वखर कउ लैनि तू आईआ राम नाम संतन घरि पाइआ ।

अर्थः- हे भाई ! जो सौदा खरीदने के लिए तू जगत में आया है वह राम नाम रूपी सौदा संतों के घर में मिलता है ।

तजि अभिमान लेहु मन मोलि राम नाम हिरदे महि तोलि ।

अर्थ:- इसलिए अहंकार छोड़ दे और मन के बदले ये सौदा खरीद ले और प्रभु का नाम हृदय में परख ।

इहु वापार विरला वापारै नानक ता कै सद बलिहारै । 15/5

अर्थ:- ये व्यापार कोई विरला बंदा ही करता है । हे नानक ! ऐसे व्यापारी पर से सदा सदके जाएं ।

रुप न रेख न रंग किछु त्रिह गुण ते प्रभ भिंन । तिसहि बुझाए नानका जिस होवै सुप्रसंन । 15/15

अर्थ:- प्रभु का ना कोई रूप है, ना चिन्ह-चक्र और ना कोई रंग । प्रभु माया के तीन गुणों से बेदाग है । हे नानक ! प्रभु अपने आप उस मनुष्य को समझाता है जिस पर खुद मेहरबान होता है ।

• नाम के धारे सगले जंत नाम के धारे खंड ब्रहंड ।

अर्थ:- सारे जीव - जंतु अकाल - पुरख के आसरे हैं, जगत के सारे हिस्से भी प्रभु के टिकाए हुए हैं ।

नाम के धारे सिम्रित बेद पुरान नाम के धारे सुनन गिआन धिआन।

अर्थ:- वेद, पुराण, स्मृतियां प्रभु के आधार पर हैं ज्ञान की बातें सुननी और तवज्जो जोड़नी भी अकाल - पुरख के आसरे ही हैं ।

नाम के धारे आगास पाताल नाम के धारे सगल आकार ।

अर्थ:- सारे आकाश - पाताल प्रभु आसरे हैं, सारे शरीर ही प्रभु के आधार पर हैं ।

नाम के धारे पुरीआ सभ भवन नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन।

अर्थः- तीनों भवन और चौदह लोक अकाल - पुरख के टिकाए हुए हैं, जीव प्रभु में जुड़ के और उसका नाम कानों से सुन के विकारों से बचते हैं ।

करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए नानक चउथे पद महि सो जन गति पाए । 16/5

अर्थः- जिस को मेहर करके अपने नाम में जोड़ता है, हे नानक ! वह मनुष्य माया के असर से ऊपर चौथे तल पर पहुँच कर उच्च अवस्था प्राप्त करता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"